'धराकम्पते' काव्य में वर्णित समस्याएँ-एक विवेचन

लज्जा भट्ट
सह आचार्य, संस्कृत विभाग
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
Email: lajjabhatt.dsb@gmail.com

वर्तमान सदी में तकनीकी तथा विज्ञान के उच्च प्रयोग द्वारा भौतिक विकास तथा उन्नति होने के साथ-साथ ही विविध प्रकार की समस्याओं का भी जन्म हुआ है।इस समस्याओं के निस्तारण हेतु समाज के प्रत्येक नागरिक को अवश्य प्रयत्न करना चाहिए तभी इन समस्याओं का कुछ हल निकल सकता है। प्राचीन काल से ही अनेक विद्वानों ने संस्कृत भाषा को अपनी लेखनी का विषय बनाते हुए संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया है। उत्तम काव्य रचना का कार्य मात्र मनोरंजन करना ही नहीं होता अपितु वह कान्तासम्मितउपदेश के द्वारा जन-जागरूकता का प्रसार भी करती है।

युगधर्म को लेकर संस्कृत के रचनाकार काव्यरचना हेतु उन्मुख हुए हैं। कवयित्री कमला पांडेय ऐसे प्रयोगधर्मी रचनाकारों में अग्रगण्य हैं।स्वातन्त्रोत्तर भारतवर्ष की अधुनातन समस्याओं के समाधान हेतु रचनाकार के पास एकमात्र उपकरण उसकी रचनाएँ ही होती हैं। जिस पर उसका वश चलता है। कवयित्री कमला ने अपनी रचनाधर्मिता से सृजनात्मक काल का प्रतिनिधित्व करते हुए उसके समाकलन में कोई कसर नहीं छोड़ी है। अपने काव्यों के माध्यम से उन्होंने पर्यावरण संकट, सांस्कृतिक धरोहरों की संरक्षा से जुड़े नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन, चारित्रिक ह्रास, विश्वव्यापी आतंकवाद, बढती आबादी, स्त्रीजीवन, ह्रास होती कुटुंब संस्कृति, अंधाधुन्धदोहन, गोवध, शिक्षा विडम्बना, नाना प्रकार के शोषण से उत्पीडितपृथिवी, गंगा प्रदूषण, आदि को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। भूकंप,भूस्खलन, मेघविस्फोट, वैश्विक ऊष्मा, सूनामी जैसी आपदाओं द्वारा पृथिवी को दिए जा रहे संत्रास की ओर डॉ० कमला का ध्यान गया है। इन सबसे उत्पन्न अपनी मार्मिक वेदना को कवयित्री द्वारा 'धराकम्पते' नामक काव्य में वर्णित किया गया है।

'धराकम्पते' काव्य मुक्तक नामक पद्यकाव्य भेद के अंतर्गत आता है। संस्कृत काव्य-शास्त्रियों की दृष्टि में मुक्तक काव्य ऐसा छन्दोबद्ध काव्य है, जिसके पद्यों की विषय-वस्तु स्वतंत्र होती है।अतः निरपेक्ष विषय-वस्तु वाले पद्यों के संग्रह को मुक्तक काव्य कहते हैं-

'छंदोबद्धपदंपद्यंतेनैकेन च मुक्तकम्'।(साहित्यदर्पण 6/313)

'धराकम्पते' ग्रन्थ के एक सौ एक श्लोकों में वर्तमान में पृथिवी की दयनीय संकटग्रस्त स्थिति को दर्शाया गया है। इसमें पर्यावरण संकट, सांस्कृतिक धरोहरों की संरक्षा से जुड़े सवाल, मूल्यों का अवमूल्यन, चारित्रिक ह्रास, विश्वव्यापी आतंकवाद तथा बढती जनसंख्या सदृश विविध समस्याओं से जूझ रही पृथिवी की मार्मिक वेदना का वर्णन किया गया है।एक ओर जहाँ भारत अपनी सांस्कृतिक धरोहरों के लिए विश्वप्रसिद्धहै, वहीं संस्कृति के संवाहक त्रेतायुगीन रामसेतु समेत राष्ट्रियगौरवों को नष्ट किया जा रहा है।हिमालयी क्षेत्रों में प्रकृति के संसाधनों का अधिकतम दोहन करते हुए वन, पर्वत, नदियाँ, समुद्र,वनस्पतियाँ, वायु, जल आदि प्राकृतिक संपदाओं का निरन्तर ह्रास हो रहा है, तथा बाढ़,भूस्खलन, वनाग्नि, बादल फटने जैसी असहनीय प्राकृतिक आपदाओं से भी मानव प्रकृति के साथ संघर्षरत रहा है।

गंगा जो भारत की प्राणधारा देवनदी कही जाती है, वह प्रदूषण जैसी संकटग्रस्त स्थिति से जूझ रही है।वनों के विनाश से पिघलते हिमनदों के द्वारा सदानीरा नदियों के सूखने से व्यथित धरा बाजारवादी शक्तियों के अंतर्गत बहुजनहितायप्रकृति प्रदत्त अनमोल उपहार तुलसी, नीम, गोमुत्र आदि को भूमण्डलीकरण के बाजार में पेटेन्टकिये जाने से चिंतित है।

©Indira Gandhi National Open University

वैश्विक आतंकवाद के घातक प्रहारों से सहमी यह पृथिवी विनाश की आशंका से काँप रही है।क्रूर हिंसा से खंडित महाविनाश की ओर जल-थल-नभ में युद्ध की विभीषिकाओं से अकाल मृत्यु को प्राप्त जीवधारियों अस्तित्व विनाश के कारण बढ़ते आतंकवाद से यह पृथिवी चिंतित है। वनों के कटान के कारण पृथिवी की रक्षाकवच के रूप में विद्यमान ओजोन परत का निरन्तर ह्रास हो रहा है। सूर्य की भयंकर ज्वालाओं द्वारा सम्पूर्ण जीवों को कष्ट किये जाने की आशंका से पृथिवीदु:खी है-

श्रीर्वनानांविपन्नायतेऽहर्निशं, वृक्षराजि: खलूच्छिद्यतेसन्ततम्।

तेन 'ओजोन' इत्युत्तमंवर्म न:, क्षीयमाणंविदित्वाधराकम्पते।।(धराकम्पते/41)

डॉ ऐनीबेसेण्टतथा मदनमोहनमालवीय जैसे शिक्षाविदों के द्वारा राष्ट्रनिर्माणकी दृष्टि से शिक्षा का जो उद्देश्य निर्धारित किया गया था, वर्तमान शिक्षा प्रणाली में वह कहीं दिखाई नहीं देता। मानवीय गुणों के विकास से परे अध्ययन सूचना एकत्रित करने तक ही सीमित वह दृष्टि निन्दित स्वार्थ के रूप में शिक्षा के मूल्यों से उपेक्षित है-

रट्यतेकेवलंपाठ्यमापातत:, शाब्दबोधोऽपिनापेक्ष्यतेतत्वत:।

नीरसांप्राणहीनां तथा जर्जरां,वीक्ष्यंशिक्षांपरीक्षांधराकम्पते।।(धराकम्पते/60)

काव्यकर्त्रीकमला गोहत्या की समस्या के प्रति भी विचारवान् है। भारतीय संस्कृति में गौ को माता के रूप में पूजा जाता है। परन्तु आधुनिक मानवों द्वारा गोमाता का निरादर किया जा रहा है।प्रतिदिन समाज में गोहत्या की घटनाएं दृष्टिगोचर हो रही हैं। कवयित्री का हृदय इस समस्या से विदीर्ण हो रहा है-

ऊर्ध्वलोकंगतासूचनार्थंप्रभुं, स्वीयं-गोरूपमाहन्यमानंभुवि।

पूरयन्तयार्तनादेनवैरोदसीं,कातराभीतिभीराधराकम्पते।।

प्राणघातोगवांकार्यतेभूरिशो, दुर्लभ: जातमासां पय: साम्प्रतम्।

'यूरियादे:' पदार्थस्यदुग्धीकृतं, रूपमालोक्यभीताधराकम्पते।।(धराकम्पते/74-75)

अपने गाय के स्वरुप को मारा जाता देख (गोहत्या होती देख) श्रीहरि को सूचना देने के लिए गाय का रूप धारण कर विष्णुलोक जाकर मानो अपने आर्तनाद से द्यावापृथिवी को कँपाती हुई कातर तथा डरी हुई धरा काँप रही है। प्रतिदिन गायों की बेतहाशा ह्त्या हो रही है। जिससे उनका दूध दुर्लभ हो गया है। आज यूरिया जैसे विष का दूध बनाकर बेचा जा रहा है-यह देख कर धरा काँप रही है।

नारी उत्पीड़नकी समस्या को भी कवयित्री ने उजागर किया है।नारी धरती,धरती नारी,कभी वह वसुधा(धन देने वाली), वसुंधरा (धन-धान्य धारण करने वाली) तथा मही (पूज्या) थी, तथा नारी महिला अर्थात् सम्मान की दृष्टि से देखी जाने योग्य। जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ दिव्यता की उजास फैल जाती थी, किन्तु आज अपनी बदसूरती को बड़े अहंकार से आयने में निहारती नारी को देख धरा सिहर उठती है। अस्मिता को ताक में रख बाजार का खिलौना बनी नारी को देख वह हतप्रभ है।

नारी की विधवा दहन से वधू दहन तक की यात्रा की साक्षिणी उसकी बदनसीबी पर आंसू बहा रही है। सती के नाम पर शव की चिता के साथ धधकती नारी, सप्तपदी के सात फेरे लेते ही दहेज़ की बलिवेदी पर आग की लपटों में लिपटी नारी भोजन के साथ चटनी की तरह परोसी गयी 'वियाग्रा' की भेंट चढ़ती नारी को देख धरा नि:शब्दहै-

नूनमाजीवनंसंवहेत्वां प्रिये,इत्युपक्रम्यवह्निपुरोऽङ्गीकृताम्।

अर्थलोभेनपत्याऽनलेपातितां, वीक्ष्यदग्धांवधूटीधराकम्पते।।(धराकम्पते/80)

©Indira Gandhi National Open University

अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण अवस्था में पड़ी मरी हुई जीवित तथा जीवित मरी हुई अरुणाशानबाग के साथ हुए घिनौने बलात्कार की कहानी सुन निराशा के गहन अन्धकारमें धरा डूब गई, न्यायपीठ पर बैठे लोग बलात्कारी को कदाचित् मृत्युदण्ड न दें।ऐसे राक्षसाधम जीवित बैठे हैं-

हन्त! नि:शब्दितांदुर्भगाश्चारूणां, शानबागेतिनाम्नींबलात्कर्षिताम्।

जीवितांवामृतांदुर्जनेनाऽऽहताम्, ईक्षमाणाप्रकामंधराकम्पते।।

मृत्युदण्डेनदण्डयंबलात्कारिणं, न्यायपीठेस्थितामोचयेयु: क्वचित्।

पापिनंतादृशं नाम रक्षोऽधमं, जीवितंवीक्ष्यमाणाधराकम्पते।।(धराकम्पते/83-84)

जहाँ स्त्रियों को पूजनीय माना जाता रहा है वहाँ आज स्त्रियों को केवल भोग की वस्तु समझा जा रहा है। 'यत्रनार्यस्तुपूज्यन्तेरमन्तेतत्र देवता: (मनुस्मृति:/तृतीय अध्याय/56) इस धर्मशास्त्रीय रहस्य को लोग समझ नहीं पा रहे हैं। यह सोचकर धरा विदीर्ण हो रही है।(धराकम्पते/77-78)

दहेज़ न मिलने के कारण स्त्रियों की हत्या, बलात्कार जैसे घिनौने कृत्यों से यह पृथिवीथरथराते हुए राक्षस प्रवृत्तियों के मनुष्यों का सामना कर रही है। भारतवर्ष में कन्या को देवी मानकर कुमारी पूजन की पवित्र परंपरा थी, वहीं कन्या भ्रूणहत्या जैसे अमानवीय कल्पना से यह पृथिवी निराश है।(धराकम्पते/81-85-92)

कलियुग की मार्मिक व्यथा के रूप में पुरुषों तथा स्त्रियों में कामुकता जैसे भोगसिद्धि हेतु शारीरिक चेष्टाओंद्वारा चरित्र के ह्रास की प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है। अच्छे कुल में उत्पन्न स्त्रियाँ भी अब दूसरे पुरुषों से खुले तौर पर कामवासनाका भोग करने की इच्छुक हैं। घृणा का घर बने उनके शरीरों को देख धरा कांप रही है।(धराकम्पते/88)

इसके साथ ही बढती आबादी जैसी समस्याएँ सम्पूर्ण पृथिवी पर असंतुलित वातावरण उत्पन्न कर रही हैं। जग में दिन प्रतिदिन बढती जनसंख्या को देखकर, कलियुग के पाप के भर से टूटती दु:खीपृथिवीकाँप रही है-

जगती प्रचुरांदिने-दिने, जनसंख्यामवलोक्यवर्धिताम्।

कलिकल्मष भागभङ्गुरा, व्यथमाना वसुधा प्रकम्पते।।(धराकम्पते/95)

निरन्तर प्रतिभा का पलायन एवं निन्दित आचरणों से युक्त मनुष्यों का आदर हो रहा है। विकृत आचरण से समाज में चारों और बेमानी, चोरी, हत्या, लूटपाट, अपहरण जैसी घटनाएँ निरन्तर हो रही हैं।मानवीय मूल्यों के ह्रास एवं परमाणु शस्त्रों के दुरुपयोग से पृथिवीअपने ह्रास के अशुभ कारणों से दु:खी है।

विषरूपीधुएँ, विषाक्त जल तथा असहनीय ध्वनि प्रदूषण जैसी समस्याएँ मानव एवं पृथिवीके अस्तित्व के लिए खतरा बनी हुई हैं। रासायनिक खाद द्वारा धरती की उर्वरता में होने वाली कमी किसानों के लिए बड़ी समस्या है।

'धराकम्पते' काव्य में कॉपती हुई धरा की वेदनाओं तथा उसके कारणों की पड़ताल है जो जन-जीवन का ध्यान द्रवित करते हुए चिन्तनधारा में प्रवाहित करने हेतु पर्याप्त है। वर्तमान समय में अज्ञानता,भोगरूपी प्रवृत्ति एवं स्वार्थ के कारण मनुष्यों द्वारा ही इस धरा का विनाश किया जा रहा है। इस काव्य में भगवान् सूर्य से अन्धकारमयीपृथिवी को अपनी किरणों द्वारा रक्षा किये जाने का आह्वान किया गया है-वराह के समान ही फिर से सूर्य (अज्ञान रुपी) अन्धकार में ले जाई जाती हुई काँपती पृथिवी को अपनी किरणों (चैतन्य) रुपी दाँतों में धारण करें। अर्थात् विद्वान् शूरवीर पृथिवी की समझदारी से रक्षा करें-

पुनर्वराहवत्सूर: स्थापयेदंशुदंष्ट्रयो:।

कम्पमानांधरामन्धेनीयमानांरसातले।।(धराकम्पते/101)

©Indira Gandhi National Open University

पृथिवी पर फैली विभिन्न प्राकृतिक एवं मानवीय समस्याओं के प्रति जागरूकता की आवश्यकता है।निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है किमनुष्य को स्वयं के तथा पृथिवी के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए मानवीय गुणों का विकास कर चिन्तन की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1.साहित्यदर्पण, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी

2.धराकम्पते, गंङ्गा साहित्य परिषद्, गंङ्गाग्राम, वाराणसी

3.मनुस्मृति,चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी

©Indira Gandhi National Open University